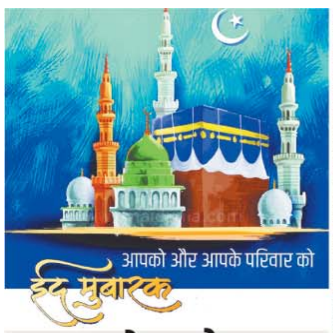

क्या होता है सदका-ए-फित्र? ईद से पहले इसे दान करना होता है जरूरी

रमजान के इस पूरे महीने में मुस्लिम धर्म के लोग अल्लाह की इबादत के लिए रोजे और पांच वक्त की नमाज अदा करते हैं. साथ ही रमजान के इस पाक महीने में मुस्लिम धर्म के लोग जकात भी निकालते हैं. जिस तरह हर मुसलमान पर रमजान के महीने रोजे रखना फर्ज है उसी तरह जकात निकालना भी फर्ज है. ठीक उसी तरह रमजान के आखिरी अशरे में सदका-ए-फित्र निकालना भी एक फर्ज है. सदका-ए-फित्र को रमजान के महीने की माफी भी कहा जाता है. रोजेदार अगर रोजे के दौरान कोई गलती भी कर बैठते हैं तो इसके जरिए वह अपनी गलती सुधार सकते हैं.

क्या होता है सदका-ए-फित्र

मरकज मस्जिद के मुफ़्ती इलियास मजाहिरी बताते हैं कि जिस तरीके से बदन की जकात नमाज अदा करना है और माल की जकात गरीबों में पैसा देना है. इसी प्रकार रोजे की भी इस्लाम में एक जकात है. जिसे सदका-ए-फित्र कहा जाता है. क्यों निकाला जाता है सदका-ए-फित्र मुफ़्ती इलियास मजाहिरी के मुताबिक, इसे आम भाषा में लोग फितरा कहते हैं. इसे निकालने के लिए 2 खास वजह बताई गई हैं. पहली वजह, यादि रोजे में आदमी से कोई कोताही हो जाए, फिजूल बात जुबान से निकल जाए या फिर ऐसा कोई गुनाह हो जाए जिससे अल्लाह ताला नाराज हो जाए. उसी कमी को दूर करने के लिए सदका-ए-फित्र है. इसलिए रोजेदार रमजान की गलती सुधारने के लिए सदका- ए-फित्र निकालते हैं. मजाहिरी ने बताया कि सदका-ए-फित्र को निकालने की अल्लाह ताला ने दूसरी वजह यह बताई है कि आप लोग तो खुशी मना रहे हो कि ईद आने वाली है, आपके पास तो अच्छे कपड़े हैं और आप अच्छे खाने बनाने की तैयारी में भी है. लेकिन कई लोग ऐसे हैं जो गरीबी के कारण ईद की खुशियां नहीं बना पाते हैं. मजाहिरी बताते हैं कि इसलिए ईद से दो-तीन दिन पहले यह सदका-ए-फित्र गरीबों को दान करने के निकाला जाता है. ताकि गरीब लोग भी ईद की खुशियां मना सके.

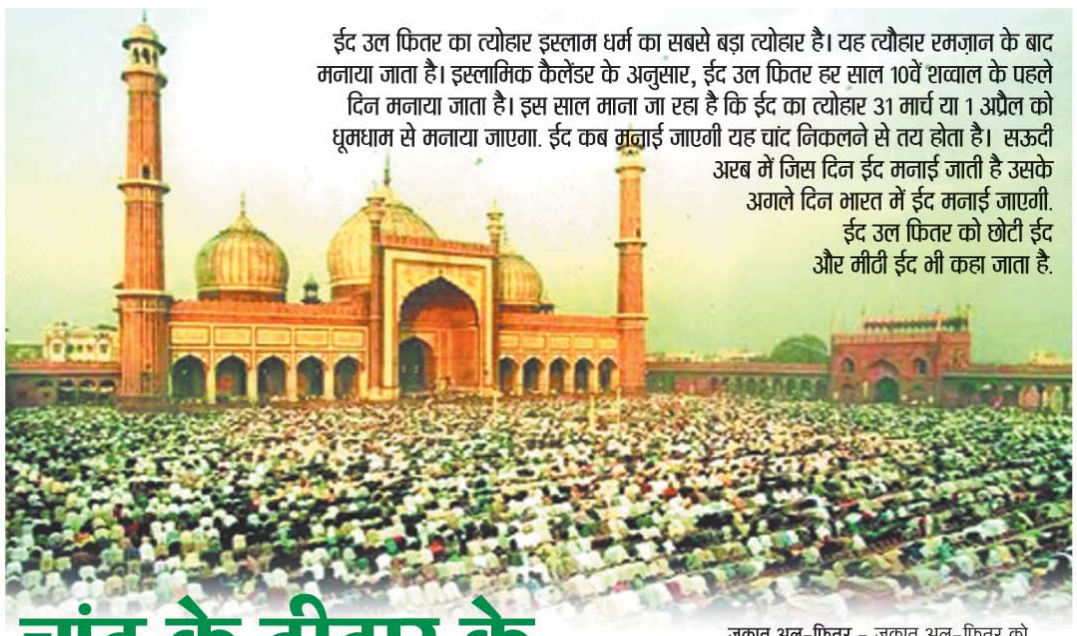

ईद उल फितर का त्योहार इस्लाम धर्म का सबसे बड़ा त्योहार है। यह त्यौहार रमज़ान के बाद मनाया जाता है। इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार, ईद उल फितर हर साल 10वें शव्वाल के पहले दिन मनाया जाता है। इस साल माना जा रहा है कि ईद का त्योहार 31 मार्च या 1 अप्रैल को धूमधाम से मनाया जाएगा. ईद कब मनाई जाएगी यह चांद निकलने से तय होता है। सऊदी अरब में जिस दिन ईद मनाई जाती है उसके अगले दिन भारत में ईद मनाई जाएगी. ईद उल फितर को छोटी ईद और मीठी ईद भी कहा जाता है.

चांद के दीदार के बाद मनाई जाती है भारत में ईद

ईद उल फितर इस्लाम में पांच नियमों का पालन करना सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें नमाज़, हज यात्रा, ईमान, रोज़ा और ज़कात शामिल है। ऐसा माना जाता है कि ईद पहली बार 624 ईस्वी में मनाई गई थी। ईद उल फितर की शुरुआत पैगंबर मुहम्मद ने की थी। कहा जाता है कि इसी दिन पैगंबर हजरत मुहम्मद ने बद्र की लड़ाई में जीत हासिल की थी. लोगों ने पैगम्बर की जीत पर खुशी का इजहार किया और मिठाइयां बांटीं. कई तरह के पकवान बनाकर जश्न मनाया जाता है. तभी से हर साल बकरीद से पहले मीठी ईद मनाई जाती है. इस त्यौहार पर मुसलमान न केवल रमज़ान के पूरा होने का जश्न मनाते हैं बल्कि कुरान के लिए अल्लाह का शुक्रिया भी अदा करते हैं। इस्लामिक इतिहास के अनुसार इसी महीने मुसलमानों ने पहला युद्ध लड़ा था जो सऊदी अरब के मदीना प्रांत के बद्र शहर में हुआ था। इसीलिए उस युद्ध को जंग-ए-बदर कहा जाता है। उस युद्ध में मुसलमानों की विजय हुई। ईद दुनिया भर के सभी मुसलमानों के लिए एक बहुत ही खास त्योहार है। ईद-उल-फितर रमज़ान-ए-पाक महीने के पूरा होने की खुशी में मनाया जाता है। इस्लामिक कैलेंडर के मुताबिक, ईद उल फितर का त्योहार हर साल 10 शव्वाल की पहली तारीख को मनाया जाता है। भारत में ईद उल फितर 31 मार्च या 1 अप्रैल को है। हालांकि, ईद मनाने का त्योहार चांद के निकलने पर भी निर्भर करता है। इस दिन लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं, मिलते हैं और प्यार बांटते हैं। इस दिन नए कपड़े पहने जाते हैं और बच्चों को ईद के तोहफे बांटे जाते हैं। घर में तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं. इस दिन मीठी सेवइयां बनाई जाती हैं. इस दिन लोग सुबह उठकर मस्जिदों में जाकर नमाज़ पढ़ते हैं और सभी से गले मिलते हैं। इस दिन फितरा भी दिया जाता है और गरीबों की मदद की जाती है। वह दिन जिस दिन सऊदी अरब में ईद मनाई जाती है। इसके अगले दिन भारत में ईद मनाई जाती है. ईद के दिन हम अपने गिले-शिकवे भूलकर एक-दूसरे को गले लगाते हैं।

ईद उल फितर समारोह

ईद के दिन सुबह सबसे पहले नमाज पढ़ी जाती है। इसके बाद लोग एक-दूसरे से गले मिलकर ईद की मुबारकबाद देते हैं। सभी रिश्तेदार और दोस्त एक-दूसरे के घर आते-जाते हैं। घरों में

तरह-तरह के मीठे व्यंजन (विशेषकर सेवइयां) बनाने की परंपरा है। घर आए मेहमानों को मीठी सेवइयां खिलाई जाती हैं। ईदी दोस्तों और रिश्तेदारों के बीच बांटी जाती है. ईद उल फितर के दिन लोग सुबह नए कपड़े पहनकर नमाज अदा करते हैं और शांति की दुआ करते हैं। ईद-उल-फितर के मौके पर लोग खुदा का शुक्रिया अदा करते हैं क्योंकि अल्लाह उन्हें पूरे महीने रोजा रखने की ताकत देता है। ईद पर गरीबों और जरूरतमंदों के लिए जकात (एक विशेष रकम) निकाली जाती है।

ईद-उल-फितर अनुष्ठान

ईद-उल-फितर रोजा तोड़ने का त्योहार है। इस शुभ त्योहार पर मुस्लिम लोगों द्वारा कई अनुष्ठान किए जाते हैं। आइये जानते हैं उनमें से कुछ के बारे में-

नया चाँद देखना - ईद-उल-फ़ितर रमज़ान के अंत में नया चाँद देखने के बाद शुरू होता है। मुस्लिम लोग चांद का बेसब्री से इंतजार करते हैं. यह वर्षों से चली आ रही पारंपरिक परंपरा है। नए चाँद के दिखने की पुष्टि धार्मिक अधिकारियों द्वारा की जाती है जो बाद में मुस्लिम समुदाय को ईद के आगमन की घोषणा करते हैं।

उस दिन उपवास - यह एक लोकप्रिय गलत धारणा है कि लोग ईद-उल-फितर पर उपवास करते हैं। इसके बजाय, उनके पास सुहूर की एक रस्म है, जहां वे केवल सुबह से पहले का भोजन करते हैं। ईद के दिन की शुरुआत ईद की नमाज़ से होती है जिसे सलात-अल-ईद के नाम से जाना जाता है। वे मस्जिद या खुले प्रार्थना मैदान में एक साथ होते हैं, दो रकात अदा करते हैं और खुद को अल्लाह के प्रति समर्पित कर देते हैं।

ज़कात अल-फ़ितर - ज़कात अल-फ़ितर को फ़ितराना या सदाक़त अल-फ़ितर के नाम से भी जाना जाता है। यह ईद-उल-फितर पर मुस्लिम समुदाय द्वारा दिया गया एक धर्मार्थ दान है। वे यह दान ईद की नमाज से पहले करते हैं। यह सभी के लिए अनिवार्य नहीं है. यह सक्षम मुसलमानों द्वारा किया जाता है। ज़कात अल-फ़ितर की राशि आम तौर पर एक भोजन की लागत के बराबर होती है। इसलिए ज्यादातर मुसलमान इसमें हिस्सा लेते हैं.

शुभकामनाओं का आदान-प्रदान - ईद की नमाज़ के बाद, मुसलमान एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं। वे एक-दूसरे को गले लगाते हैं और ईद मुबारक या हैप्पी ईद कहकर शुभकामनाएं देते हैं। यह परंपरा आनंद और एकता की अभिव्यक्ति है। इसलिए वे एक-दूसरे को गर्मजोशी से गले लगाते हैं, हाथ मिलाते हैं और शुभकामनाएं देते हैं। परिवार, मित्र और पड़ोसी बधाई देने के लिए एकत्र होते हैं।

उत्सव की पोशाक - ईद-उल-फितर मुसलमानों के लिए अपनी बेहतरीन पोशाक पहनने का समय है। सभी पुरुष और महिलाएं अपने पारंपरिक परिधान जैसे कमीज, पायजामा, कुर्ता आदि के साथ आभूषण, इत्र और अन्य सामान पहनते हैं। उनकी बेहतरीन पोशाक उनकी सांस्कृतिक विरासत और व्यक्तिगत शैली को दर्शाती है। ईद-उल-फितर के अवसर पर चमकीले रंग, अद्वितीय पैटर्न और शानदार कपड़े पसंद किए जाते हैं।

उत्सव की दावत - ईद-उल-फितर का उत्सव उनकी पसंद के अनुसार दावतों से भरा होता है। वे अपने परिवार, दोस्तों और प्रियजनों के साथ भोजन का आनंद लेते हैं। घर पर विभिन्न प्रकार के पारंपरिक व्यंजन और मिठाइयाँ तैयार की जाती हैं, जिनमें कबाब, समोसा, बाकलावा, शीर खुरमा और भी बहुत कुछ शामिल हैं। ईद-उल-फितर के दौरान, मुस्लिम घर मसालों और खाना पकाने की सुगंध से भर जाते हैं। वे एक दूसरे को दावत का भोजन देने के लिए भी जाते हैं।

ईदी और उपहार - ईदी परिवार के सदस्यों, विशेषकर बच्चों को दी जाने वाली धनराशि के रूप में एक प्रकार का उपहार है। ईद-उल-फितर के मौके पर मुस्लिम बच्चे ईदी और उपहार पाने के लिए उत्साहित हैं। यह प्रेम, उदारता और सद्भावना का संकेत है। बड़े लोग बच्चों को ईदी देते हैं जिसका उपयोग वे खिलौने, कपड़े और उपहार खरीदने में कर सकते हैं। ईद-उल-फितर की रस्में मुसलमानों के बीच आध्यात्मिक महत्व, सांस्कृतिक समृद्धि और सांप्रदायिक सद्भाव में विश्वास का एक बयान है।

ईद उल फितर के लिए क्या करें

- ईद के दिन नमाज जरूर पढ़नी चाहिए. मान्यता के अनुसार, इस दिन नमाज पढ़ने से अल्लाह रमजान के महीने में की गई सभी गलतियों को माफ कर देते हैं और आप पर अपनी रहमत बरसाते हैं।
- ईद के दिन दान और दक्षिणा का विशेष महत्व माना जाता है। इस दिन किए गए दान का कई गुना फल मिलता है।
- ईद के मौके पर सभी के साथ प्रेम और सौहार्द के साथ मिलना-जुलना चाहिए, ऐसा करना न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी बहुत अच्छा माना जाता है।
- इस त्योहार के मौके पर आपको इंसानों के साथ-साथ जानवरों को भी खाने की चीजें दान करनी चाहिए। ऐसा करने से अल्लाह खुश होते हैं और आप पर अपनी कृपा बरसाते हैं।
- ईद का त्योहार प्रेम और भाईचारे का संदेश देता है। इसलिए अगर आप अपने प्रियजनों से नाराज हैं तो आपको इस दिन से सब कुछ भूलकर नई शुरुआत करनी चाहिए।

ईद उल फितर के लिए क्या न करें

- मुस्लिम धर्म में नशे को हराम बताया गया है लेकिन फिर भी व्यक्ति इन चीजों का सेवन करता है। इसलिए उन्हें ईद के दिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए. ऐसा करने से वह पाप का भागी बनता है।
- ईद के दिन किसी भी तरह से किसी भी व्यक्ति का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए, ऐसा करने से सामने वाले को ठेस पहुंचती है और अल्लाह आपसे नाराज हो जाते हैं।
- ईद के मुबारक मौके पर किसी से लड़ाई-झगड़ा या अपशब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- ईद के मौके पर अपने माता-पिता या बड़ों को दुखी नहीं करना चाहिए। ऐसा करना सबसे बड़ा अपराध माना जाता है. ऐसा सिर्फ ईद पर ही नहीं बल्कि कभी भी नहीं करना चाहिए.
- इस दिन किसी का प्रार्थना करने या श्रद्धांजलि देने का अधिकार नहीं छीना जाना चाहिए। ऐसा करने से आप अल्लाह की रहमत से वंचित हो सकते हैं।
- तो यह था ईद-उल-फितर के बारे में। यह दुनिया भर के मुसलमानों के लिए सबसे प्रसिद्ध त्योहारों में से एक है और इसे बहुत खुशी और उत्साह के साथ मनाया जाएगा। हमने सभी आवश्यक विवरण प्रदान किए हैं जिनका उपयोग करके आप यह त्योहार मना सकते हैं।

खुशियां बांटने का बेहतरीन मौका है ईद उल फितर

ईद -उल-फित्र दरअसल दो शब्द हैं। ईद और फित्र। असल में ईद के साथ फित्र को जोड़े जाने का एक खास मकसद है। वह मकसद है रमजान में जरूरी की गई रुकावटों को खत्म करने का ऐलान। साथ ही छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सबकी ईद हो जाना। यह नहीं कि पैसे वालों ने, साधन-संपन्न लोगों ने रंगारंग, तड़क-भड़क के साथ त्योहार मना लिया व गरीब-गुरबा मुंह देखते रह गए। शब्द फित्र के मायने चीरने, चाक करने के हैं और ईद-उल-फित्र उन तमाम रुकावटों को भी चाक कर देती है, जो रमजान में लगा दी गई थीं। जैसे रमजान में दिन के समय खाना-पीना व अन्य कई बातों से रोक दिया जाता है। ईद के बाद आप सामान्य दिनों की तरह दिन में खा-पी सकते हैं। गोया ईद-उल-फित्र इस बात का ऐलान है कि अल्लाह की तरफ से जो पाबंदियां माहे-रमजान में तुम पर लगाई गई थीं, वे अब खत्म की जाती हैं। इसी फित्र से फित्रा बना है। फित्रा यानी वह रकम जो खाते-पीते, साधन संपन्न घरानों के लोग आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को देते हैं। ईद की नमाज से पहले इसका अदा करना जरूरी होता है। इस तरह अमीर के साथ ही गरीब की, साधन संपन्न के साथ साधनविहीन की ईद भी मन जाती है। असल में ईद से पहले यानी रमजान में जकात अदा करने की परंपरा है। यह जकात भी गरीबों, बेवाओं व यतीमों को दी जाती है। इसके साथ फित्रे की रकम भी उन्हीं का हिस्सा है। इस सबके पीछे सोच यही है कि ईद के दिन कोई खाली हाथ न रहे, क्योंकि यह खुशी का दिन है। यह खुशी खासतौर से इसलिए भी है कि रमजान का महीना जो एक तरह से परीक्षा का महीना है, वह अल्लाह के नेक बंदों ने पूरी अकीदत (श्रद्धा), ईमानदारी व लगन से अल्लाह के हुक्मों पर चलने में गुजारा। इस कड़ी आजमाइश के बाद का तोहफा ईद है। किताबों में आया है कि रमजान में पूरे रोजे रखने वाले का तोहफा ईद है। इस दिन अल्लाह की रहमत पूरे जोश पर होती है तथा अपना हुक्म पूरा करने वाले बंदों को रहमतों की बारिश से भिगो देती है। अल्लाह पाक रमजान की इबादतों के बदले अपने नेक बंदों को बख्शे जाने का ऐलान फरमा देते हैं। ईद की नमाज के जरिए बंदे खुदा का शुक्र अदा करते हैं कि उसने ही हमें रमजान का पाक महीना अता किया, फिर उसमें इबादतें करने की तौफीक दी और इसके बाद ईद का तोहफा दिया। तब बंदा अपने माबूद (पूज्य) के दरबार में पहुंचकर उसका शुक्र अदा करता है। सही मायनों में तो ये मन्नतें पूरी होने का दिन है। इन मन्नतों के साथ तो ऊपर वाले के सामने सभी मंगते बनने को तैयार हो जाते हैं। उस रहीमो-करीम (अत्यंत कृपावान) की असीम रहमतों की आस लेकर एक माह तक मुसलसल इम्तिहान देते रहे। कोशिश करते रहे कि उसने जो आदेश दिए हैं उन्हें हर हाल में पूरा करते रहें। चाहे वह रोजों की शक्ल में हो, सहरी या इफ्तार की शक्ल में। तरावीह की शक्ल में या जकात-फित्रे की शक्ल में। इन मंगतों ने अपनी हिम्मत के मुताबिक अमल किया, अब ईद के दिन सारे संसार का पालनहार उनको नवाजेगा।

इस ईद को मीठी ईद के नाम से भी जाना जाता है। ईद को पूरी दुनिया में पूरे धूम से मनाया जाता है। लोग इस दिन घरों में मीठे पकवान बनाते हैं। खासकर सेंवईयां जरूर बनती है। लोग एक-दूसरे से गले मिलकर शिकवे दूर करते हैं। इस्लाम धर्म में ये त्योहार भाईचारे का संदेश देता है। इस दिन मुस्लिम समुदाय के लोग नए कपड़े पहनकर नमाज अदा करते हैं और अपने परिवार के अमन चैन की दुआ करते हैं। इस दिन पढ़ी जाने वाली नमाज को सलात अल फज़्र कहा जाता है। वहीं ईद से पहले हर मुसलमान के लिए फितरा देना फर्ज बताया गया है।